पाठ–12

मुंडमाल

आज उदयपुर के चौक में चारों ओर बड़ी चहल–पहल है। नवयुवकों में नवीन उत्साह उमड़ उठा है। मालूम होता है किसी ने यहाँ के कुँओं में भाँग घोल दी है। नवयुवकों की मूँछों में ऐंठें भरी हुई हैं। आँखों में ललाई छा गई है। हर तरफ से वीरता की ललकार सुनाई पड़ती है।

महाराणा राजसिंह के समर्थ सरदार चूंडावतजी आज औरंगजेब का दर्प दलन करने और उसके अंधाधुंध अंधेर का उचित उत्तर देने वाले हैं। यद्यपि उनकी अवस्था अठारह वर्ष से अधिक नहीं है, तथापि जंगी–जोश के मारे वह इतने फूल गए हैं कि कवच में नहीं अटते। घोड़े पर सवार होने के लिए वह ज्यों ही हाथ में लगाम थामकर उचकना चाहते हैं त्यों ही अनायास उनकी दृष्टि सामने वाले महल की झंझरीदार खिड़की पर, जहाँ उनकी नवोढ़ा पत्नी खड़ी है, जा पड़ती है। हाड़ा वंश की सुलक्षणा, सुशीला और सुंदर सुकुमारी कन्या से आपका विवाह हुए दो–चार दिन से अधिक न हुए होंगे। अभी नवोढ़ा रानी के हाथ का कंकण हाथ की शोभा बढ़ा रहा है। अभी तक चाँद बादल के ही अंदर छिपा हुआ था, किंतु नहीं, आज तो उदयपुर की शोभा देखने के लिए घनपटल में से अभी वह प्रकट हुआ है।

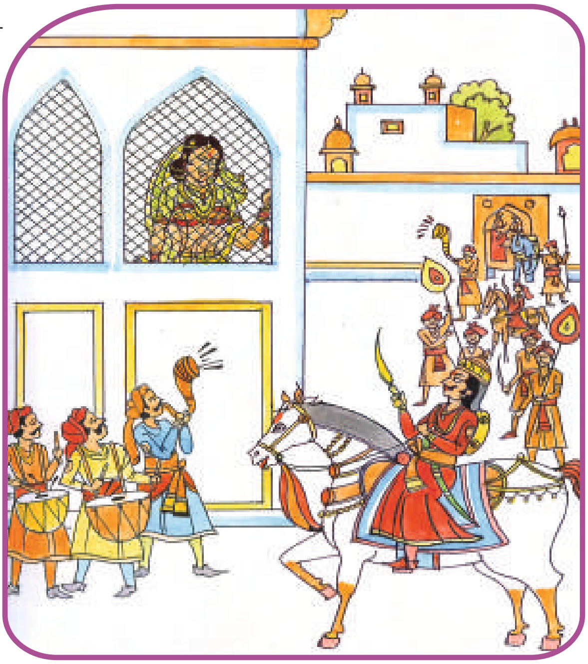

चूंडावत जी हाथ में लगाम लिए ही बादल के जाल से निकले हुए चंद्र पर टकटकी लगाये खड़े हैं। जालीदार खिड़की से छन–छनकर आने वाली चाँद की चटकीली चाँदनी ने चूंड़ावत चकोर को आपे से बाहर कर दिया है, हाथ की लगाम हाथ ही में है, मन की लगाम खिड़की में है। चूंडावत जी का चित्त चंचल हो चला। वह चटपट चंद्र भवन की ओर चल पड़े। यद्यपि चिन्ता में चूर हैं पर चंद्र दर्शन की चोखीचाट लग रही है। वह संगमरमरी सीढ़ियों के सहारे चंद्र भवन पर चढ़ गए। हृदय हारिणी हाड़ी रानी हिम्मत की हद करके हलकी आवाज़ में बोली, "प्राणनाथ! मन मलिन क्यों है। मुखारविंद मुर्झाया क्यों है?"

चूंडावत जी रानी की चपला की–सी चमक–दमक देख चकित होकर बोले, "प्राणप्यारी! रूपनगर के

राठौड़ वंश की राजकुमारी को दिल्ली का बादशाह बलात् ब्याहने आ रहा है, इससे पहले वह राजकुमारी हमारे माननीय राणा जी को वर चुकी है। कल पौ फटते ही राणाजी रूपनगर की राह लेंगे। हम बीच ही में बादशाह की राह रोकने के लिए रण यात्रा कर रहे हैं। शूर सामंतो की सैंकड़ों सजीली सेनाएँ साथ में हैं परंतु हम लड़ाई से अपने लौटने का लक्षण नहीं देख रहे हैं। इस बार घनघोर युद्ध छिड़ेगा। हम लोग जी जान से लड़ेंगे। हम सत्य की रक्षा के लिए पुर्जे–पुर्जे कट जाएँगे, किंतु प्राणेश्वरी! हमको केवल तुम्हारी चिंता बेहद सता रही है। किसे मालूम था कि तुम–सी अनूपरूपा कोमलांगी के भाग्य में ऐसा भयंकर खेल होगा?किंतु ऐसे ही अवसरों पर हम क्षत्रियों की परीक्षा हुआ करती है। संसार के सारे सुखों की बात ही क्या, प्राणों की भी आहुति देकर क्षत्रियों को अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ता है।''

हाड़ी रानी हृदय पर हाथ रखकर बोली, ''प्राणनाथ! सत्य और न्याय की रक्षा के लिए लड़ने जाते समय सहज सुलभ सांसारिक सुखों की बुरी वासना को मन में घर करने देना आपके समान प्रतापी क्षत्रियकुमार का काम नहीं है। अपने आप को सुख के फंदे में फाँसकर अपने जातीय कर्तव्य मत भूलिए। मेरा मोह छोड़ दीजिए। भारत की महिलाएँ स्वार्थ के लिए सत्य का संहार करना नहीं चाहतीं। आर्य–महिलाओं के लिए समस्त संसार की सारी संपत्तियों से बढ़कर सतीत्व ही अमूल्य धन है। मैं भी अगर सच्ची राजपूत कन्या होऊँगी तो शीघ्र ही आपसे स्वर्ग में जा मिलूँगी। विलंब करने का समय नहीं।''

चूंडावत जी का चित्त हाड़ी के हृदयरूपी हीरे को परख कर पुलकित हो उठा। प्रफुल्ल मन से चूंडावतजी ने रानी को बार–बार गले से लगाया। चूंडावत जी आपसे आप कह उठे, ''धन्य देवि! तुम्हारे ... . विराजने के लिए वस्तुतः हमारे हृदय में बहुत ऊँचा सिंहासन है अथवा अब हम मरकर अमर होने जाते हैं। देखना प्रिय! कहीं ऐसा न हो कि ....।'' कंठ गद्‌गद् हो गया। रानी ने फिर उन्हें आलिंगित करके कहा, ''प्राणनाथ! इतना अवश्य याद रखिए कि छोटा बच्चा चाहे आसमान छू ले, सीपों में संभवतः समुद्र समा जाय, हिमाचल भी हिल जाय पर भारत की सती देवियाँ अपने प्रण से तनिक भी नहीं डिग सकतीं।'' चूंडावतजी प्रेमभरी नजरों से एकटक रानी को देखते– देखते सीढ़ियों से उतर पड़े। रानी सतृष्ण नेत्रों से ताकती रह गईं।

चूंडावत जी घोड़े पर सवार हो रहे हैं। डंके की आवाज़ घनी होती जा रही है। घोड़े फड़क–फड़क कर अड़ रहे हैं। चूंडावत जी का प्रशस्त ललाट अभी तक चिंताओं की रेखाओं से कुचिंत

है। इधर रानी विचार कर रही है, मेरे प्राणेश्वर का मन यदि मुझमें ही लगा रहेगा तो विजयलक्ष्मी किसी प्रकार उनके गले में जयमाला नहीं डालेगी। इसी विचार तरंग में रानी डूबती उतरती है। तभी चूंडावत जी का अंतिम संवाद लेकर आया हुआ एक प्रिय सेवक विनम्र भाव से कह उठता है, ''चूंडावत जी चिह्न चाहते हैं दृढ़ आशा और अटल विश्वास का। संतोष होने योग्य कोई अपनी प्यारी वस्तु दीजिए।'' स्नेह सूचक संवाद सुनकर रानी अपने मन में विचार कर रही है। ''प्राणेश्वर का ध्यान जब तक इस तुच्छ शरीर की ओर लगा रहेगा, तब तक निश्चय ही वह कृत कार्य नहीं होंगे।'' इतना सोचकर बोली– ''अच्छा खड़ा रह, मेरा सिर लिए जा।''

उत्तर भी नहीं दे पाया था कि..... ।

दाहिने हाथ में नंगी तलवार और बाएँ हाथ में लच्छेदार केशोवाला मुंड लिये हुए रानी का धड़ विलास मंदिर के संगमरमरी फर्श को सती के रक्त से सींचकर पवित्र करता हुआ धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा।

बेचारे भय चकित सेवक ने यह दृढ़ आशा और अटल विश्वास का चिह्न काँपते हुए हाथों से जाकर चूंडावतजी को दे दिया। चूंडावत जी प्रेम में पागल हो उठे। वह अपूर्व आनंद में मस्त होकर ऐसे फूल गए कि कवच की कड़ियाँ कड़क उठीं।

सुगंधों से सींचे हुए मुलायम बालों के गुच्छों को दो हिस्सों में चीरकर चूंडावत जी ने उस सौभाग्य सिंदूर से भरे हुए सुंदर शीश को गले में लटका लिया। मालूम हुआ, मानो स्वयं भगवान रुद्रदेव भीषण वेश धारण करके शत्रु का नाश करने जा रहे हैं। सबको भ्रम हो उठा कि गले में काले नाग लिपट रहे हैं या लम्बी–लम्बी सटाकार लटें हैं। अटारियों पर से सुंदरियों ने भर–भर अंजलि फूलों की वर्षा की, मानो स्वर्ग की मानिनी अप्सराओं ने पुष्पवृष्टि की हो। गाजे बाजे की ध्वनि के साथ लहराता हुआ आकाश फाड़ने वाला एक गम्भीर स्वर चारों ओर गूँज उठा–धन्य मुंडमाल!!

शिव पूजन सहाय

शब्दार्थ

दर्पदलन	–	अभिमान चूर–चूर करना
झँझरीदार	–	जालीदार (बहुत छोटे–छोटे छेद वाली खिड़की)
नवोढ़ा	–	नव विवाहिता
घनपटल	–	बादलों की ओट
हृदय–हारिणी	–	मन को लुभाने वाली
सतृष्ण	–	तृष्णा सहित
सटाकार	–	लंबी पतली छड़ी के आकार की
मनिनी	–	अभिमान करने वाली

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

जंगी–जोश, मुखारविंद, पुष्प वृष्टि, हृदय हारिणी, झँझरीदार

सोचें और बताएँ–

1. सरदार चूंड़ावत जी युद्ध में क्यों जा रहे थे ?
2. इस पाठ के शीर्षक 'मुंडमाल' का क्या आशय है ?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. रूप नगर के राठौड़ वंश की राजकुमारी ने पहले वर लिया था –
   (क) दिल्ली के बादशाह को (ख) राणा राजसिंह को
   (ग) सरदार चूंड़ावत जी को (घ) शूर सामन्तों को ( )
2. नवोढ़ा रानी ने आशा और अटल विश्वास का चिह्न भेंट किया –
   (क) अपनी चूड़ी (ख) अपना सिर
   (ग) अपना कंगन (घ) अपना रूमाल ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. उदयपुर के चौक में चहल–पहल क्यों थी ?
2. चूंड़ावत जी के मन की लगाम कहाँ अटकी हुई थी ?
3. चूंड़ावत जी ने रानी से चिह्न क्यों मंगवाया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चूंड़ावत जी को अपने युद्ध से वापस लौटने के लक्षण क्यों नहीं दिख रहे थे ?
2. हाड़ी रानी ने युद्ध में जाते हुए चूंड़ावत जी को क्या समझाया ?
3. चूंड़ावत जी ने रानी के द्वारा भेजे गए आशा और अटल विश्वास के चिह्न का क्या किया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. हाड़ी रानी ने अपने सिर को ही चिह्न के रूप में क्यों भेंट किया ?
2. महाराजा राजसिंह व औरंगजेब के बीच युद्ध का क्या कारण था?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण व विशेष्य छाँटकर लिखिए
   जंगी जोश, झँझरीदार खिड़की, सुकुमारी कन्या, नवोढ़ा रानी, सटाकार लटें, सजीली सेनाएँ।
2. नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए–
   चूंड़ावत जी बोले, "प्राणेश्वरी! हमको केवल तुम्हारी चिन्ता बहुत सता रही है। किसे मालूम था कि

तुम–सी अनूपरूपा, कोमलांगी के भाग्य में ऐसा भयंकर खेल होगा?''

गद्यांश को पढ़ते समय हम विराम चिह्नों पर रुकते हैं। इन विराम चिह्नों को नाम से जानते हैं; जैसे –

,	अल्प विराम
" "	उद्धरण चिह्न
!	विस्मय बोधक चिह्न
?	प्रश्नवाचक
।	पूर्ण विराम
–	योजक चिह्न

आप भी नीचे दिए गए गद्यांश में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पुनः लिखिए –

हाड़ी रानी हृदय पर हाथ रखकर बोली प्राणनाथ सत्य और न्याय की रक्षा के लिए लड़ने जाते समय सहज सुलभ सांसारिक सुखों की बुरी वासना को मन में घर करने देना आपके समान प्रतापी क्षत्रियकुमार का काम नहीं है

पाठ से आगे

1. हाड़ी रानी दृढ़ आशा और अटल विश्वास के चिह्न के रूप में अपने सिर के स्थान पर और क्या चिह्न भेज सकती थी?
2. अगर सरदार चूंड़ावत जी के स्थान पर आप होते तो क्या करते? लिखिए।

यह भी करें

1. हाड़ा वंश की राजकुमारी ने अपने देश के लिए बलिदान दिया। अपने शिक्षक/शिक्षिकाओं की मदद से ऐसी अन्य वीरांगनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें जिन्होंने अपने देश के लिए बलिदान किया हो।

तब और अब

पुराना रूप	यद्यपि	युद्ध	चिह्न
मानक रूप	यद्‌यपि	युद्‌ध	चिह्‌न

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

Love not fear, is the main spring of all true renunciation.

भय नहीं अपितु प्रेम ही सच्चे त्याग का स्रोत है।